इंद्रप्रस्थ उद्घोष

राष्ट्रीय छात्रशक्ति

दिल्ली | शुक्रवार | 8 दिसंबर, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | मार्गशीर्ष दशमी | शक संवत् 1945

अग्र लेख

स्वाभिमानी भारत की ओर...

वही ऊर्जा, वही जोश, वही बेफिक्री। 75 वर्ष की यात्रा में केवल कलैंडर बदले हैं। यहां बदलते वर्ष केवल संख्या हैं। उल्लास भरे वातावरण में देश के प्रश्नों के रचनात्मक समाधान खोजते युवा। हर गतिविधि में रचनात्मकता की झलक, नया भारत गढ़ने की चाह, और एक जीवंतता, जो परिषद की विशेषता है।

दत्ताजी डिडोलकर प्रदर्शनी का उदघाटन करते हुए उनके साथ महामंत्री का दायित्व निभाने वाले श्री राजकुमार भाटिया पुरानी स्मृतियों में खो गए। कठिनाइयों के उस दौर को याद करते हुए उन्होंने जहां अपनी यादें साझा की, वहीं आज की परिषद को उन क्षितिजों को स्पर्श करते हुए देख कर संतोष भी प्रकट किया, जिनकी कल्पना वह अपने काल में किया करते थे।

पुरानी स्मृतियां एक बार फिर उमड़ उठेंगी, जब आज तक विभिन्न क्षेत्रीय और राष्ट्रीय दायित्वों पर रहे कार्यकर्ता एकसाथ जुटेंगे। यह अविस्मरणीय क्षण होता है, जब कार्यकर्ताओं की पुरानी और नई पीढ़ी साथ आती है। अपने समय की घटनाओं और किस्सों को याद करते ही आज के प्रश्न और भविष्य की संभावनाओं को एक सहयात्री के रूप में जीने का यह अनूठा अवसर है।

नित नए प्रयोग परिषद की विशेषता है। इसी में एक नया आख्यान जुड़ गया, जब अधिवेशन में ध्वजारोहण के समय राष्ट्रगीत का गायन करने वाले कार्यकर्ताओं के साथ ही 150 दृष्टिबाधित दिव्यांग युवाओं ने भी राष्ट्रगीत गाया।

छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्यारोहण के 350वें वर्ष को रेखांकित करने के लिए महाराष्ट्र से प्रारंभ यात्रा अधिवेशन स्थल पहुंची। यात्रा के साथ उनके सैनिकों और सहयोगियों की वेशभूषा में कार्यकर्ता चल रहे थे। यात्रा का पूरे मार्ग में स्थान-स्थान पर स्वागत हुआ तथा सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

अधिवेशन को न केवल अपनी भव्यता अपितु कल्पनाशीलता और सौन्दर्य बोध के लिए भी स्मरण किया जाएगा। भारत की सांस्कृतिक विरासत तथा ज्ञान परम्परा को सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रदर्शित करने वाली छवियां अंकित की गई हैं। इसकी तैयारी के लिए बड़ी संख्या में कला के विद्यार्थियों को जोड़ कर पेन्टिंग बनाने का कार्य प्रारंभ किया गया था, जो लगभग एक माह तक चला।

एक अनगढ़ मैदान को समतल कर एक कलाकृति सदृश बना देने में दिल्ली में ही नहीं, अन्य प्रान्तों से आए सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने दिन-रात एक कर दिया। देश भर के 44 प्रांतों से आए कार्यकर्ताओं में न केवल मुख्य भूमि अपितु लद्दाख, सिक्किम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, असम के साथ ही अंडमान-निकोबार, दमन-दीव, लक्षद्वीप तथा नेपाल से भी आए प्रतिनिधि हैं।

अपनी कला और संस्कृति से लोगों को परिचित कराते और अन्य प्रदेशों की संस्कृति का परिचय प्राप्त करते यह प्रतिनिधि राष्ट्रीय एकात्मता स्थापित करने के इस अभियान के सच्चे प्रतिनिधि हैं। अतीत से सीख कर, आज में जीते हुए भविष्य के सशक्त, समृद्ध और स्वाभिमानी भारत के निर्माण की नींव की दृढ़ता की अनुभूति इन युवाओं के कंठ से गूंजने वाले जयघोषों में अनुभव होती है।

संपादक
आशुतोष भटनागर

संपादक-मण्डल
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह
उत्कर्ष श्रीवास्तव

अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारम्भ

दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में लगाई गई आठ विषय और नौ खण्डों में समायोजित प्रदर्शनी

राजधानी दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में स्थित डीडीए मैदान में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में लगाई गई भव्य प्रदर्शनी का उद्घाटन आज अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. राजकुमार भाटिया ने किया। उद्घाटन समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार, राष्ट्रीय मंत्री साक्षी सिंह, दिल्ली प्रांत सह मंत्री सार्थक शर्मा, दिल्ली प्रांत उपाध्यक्षा डॉ. सुमन मीणा उपस्थित रहे।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद पूर्व अध्यक्ष प्रा. राजकुमार भाटिया ने कहा कि अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। स्वर्गीय दत्ताजी का जीवन देश एवं युवाओं के उत्थान तथा शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के प्रति समर्पित रहा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक होने के साथ ही उन्होंने भारत की संस्कृति को जागृत रखने के विभिन्न प्रयासों में सक्रिय योगदान दिया। इससे प्रेरणा लेते हुए प्रदर्शनी में भारत के गौरवशाली इतिहास और विश्व को दिशा देने के संदर्भ को उल्लेखित करते हुए अमृतकाल की वर्तमान उपलब्धियों को दर्शाया गया है। यह प्रदर्शनी अभाविप के विभिन्न क्रियाकलापों के द्वारा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के ध्येय को स्पष्ट एवं लघु भारत का दर्शन कराती है।

इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रदीप कुमार ने कहा कि दिल्ली ने बहुत कुछ देखा है। आज देश अपने अमृतकाल को हर्षोल्लास से मना रहा है और अभाविप का भी अमृतकाल है। अभाविप के सभी कार्यकर्ता इसके साक्षी और बधाई के पात्र हैं। अभाविप जिस उद्देश्य को लेकर चली थी, वह पूरे होते नजर आ रहे है, जिनमें धारा-370 ,राममंदिर निर्माण, राष्ट्र समर्पित राष्ट्रीय शिक्षा नीति आदि उल्लेखनीय कार्य पूरे होते जा रहे हैं।

जानकारी हो कि अधिवेशन स्थल पर आठ विषय और नौ हिस्सों में संयोजित प्रदर्शनी को देशभर के अलग-अलग शैक्षणिक संस्थानों के विद्यार्थियों द्वारा तैयार किया गया है। प्रदर्शनी में शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350 वीं वर्षगांठ पर उनकी शौर्यगाथा, विश्वगुरु भारत, स्वाधीनता का अमृत महोत्सव, अभाविप के विभिन्न आयामों और गतिविधियों द्वारा किए जा रहे कार्यों, दिल्ली का वास्तविक इतिहास, दिल्ली में हुए प्रमुख छात्र आंदोलन एवं अभाविप के 75 वर्षों की ध्येय यात्रा को प्रदर्शित किया गया है। इस मौके पर प्रदर्शनी निर्माण में लगे छात्र मूर्तिकारों को सम्मानित भी किया गया।

शान से लहराया अभाविप का ध्वज

वंदे मातरम् के गान से गूंज उठा 'इंद्रप्रस्थ'

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में आज राष्ट्रीय अध्यक्ष राजशरण शाही एवं राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ला ने ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर अधिवेशन में हिस्सा लेने के लिए आए हजारों कार्यकर्ता उपस्थित थे। सायंकाल पौने पांच बजे हुए ध्वजारोहण कार्यक्रम के बाद अधिवेशन स्थल पर अभाविप का लहराता ध्वज, संगठन के उत्साह, कार्यों एवं प्रतिबद्धता को प्रदर्शित कर रहा था। ध्वजारोहण के बाद इन्द्रप्रस्थ नगर के प्रांगण में 8500 विद्यार्थियों ने एक साथ वंदे-मातरम् का सामूहिक गान किया। वंदे मातरम् गान के दौरान 150 दृष्टिबाधित दिव्यांग विद्यार्थियों के समूह ने तिरंगे की रचना बनाई। मुख्य ध्वज के साथ छोटे ध्वज और ध्वज स्तंभ के आसपास भारत की प्राचीन स्थापत्य के गौरव को अनुभव कराती पुराने किले की रेत कला सभी के लिए आकर्षण का विषय रही। ध्वज स्थल को देखकर कार्यकर्ता स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे।

गृहमंत्री अमित शाह आज करेंगे अभाविप अधिवेशन का औपचारिक उद्घाटन

दिल्ली, 7 दिसंबर। दिल्ली स्थित बुराड़ी के डीडीए मैदान में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 69वें अधिवेशन का औपचारिक रूप से उद्घाटन आज गृहमंत्री अमित शाह करेंगे।

जानकारी के अनुसार गृहमंत्री अमित शाह लगभग साढ़े ग्यारह बजे अधिवेशन स्थल पहुंचेगे, जहां उनका स्वागत अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही सहित संगठन के अन्य पदाधिकारी करेंगे। इसके बाद गृह मंत्री शाह अधिवेशन का औपचारिक उद्घाटन करेंगे और अधिवेशन में हिस्सा लेने के लिए आए अभाविप के प्रतिनिधियों को सम्बोधित करेंगे। इस दौरान गृह मंत्री शाह अभाविप के पूर्व अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन भी करेंगे।

अपने अपेक्षित उद्देश्य को प्राप्त कर रही है अभाविप : प्रा. राजकुमार भाटिया

संजय दीक्षित

राजधानी दिल्ली के बुराड़ी क्षेत्र में स्थित डीडीए मैदान में आयोजित किए जा रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का विधिवत शुभारंभ गुरुवार को अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. राजकुमार भाटिया ने किया। इस अवसर पर उन्होंने अभाविप से जुड़े कई प्रसंगों की जानकारी अभाविप कार्यकर्ताओं के सामने रखी। प्रदर्शनी के उद्घाटन के बाद अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रा. राजकुमार भाटिया ने बताया कि उन्होंने लगभग 43 वर्ष का समय अभाविप कार्य के लिए व्यतीत किया। इस दौरान लगभग 35 अधिवेशन में हिस्सा लिया, जिसमें पहला अधिवेशन 1967 इंदौर में हुआ अधिवेशन था, जबकि अंतिम 2010 में आयोजित अधिवेशन बंगलुरु में हुआ था। इस तरह देखा जाए तो उनके अपने नाम पर कई रिकार्ड हैं। अगर अभाविप उन्हें प्रमाणपत्र देती है तो वह प्रमाणपत्र उनके काम आएगा।

अभाविप की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि अभाविप इतनी प्रगति करेगा, ऐसा उन्होंने कभी नहीं सोचा था। जिस समय वह अभाविप का काम कर रहे थे, उस समय परिषद का वर्णन करना पड़ता था। लेकिन वर्णन करते समय यह भी ध्यान रखना होता था कि वर्णन में कहीं भी अतिशयोक्ति न होने पाए और जो सच है, वही बताया जाए। यह एक प्रकार से बौद्धिक व्यायाम की तरह होता था। उन्होंने अभाविप के बारे में कहा था कि यह अस्थायी जनसंख्या का स्थायी संगठन (Permanent organization of floating population) है। 'छात्र आज का नागरिक है', इसे वह हमेशा सामने वाले को प्रभावित करने के लिए ही बोलते थे। लेकिन बीस-तीस वर्ष बाद अभाविप का वर्तमान स्वरूप उभर कर सामने आया।

उन्होंने कहा कि दत्ताजी डिडोलकर पर लगाई गई प्रदर्शनी को उन्होंने देखा, लेकिन अगर प्रदर्शनी को सही ढंग से देखना और समझना है तो इसमें कम से कम दो घंटे का समय लगेगा। प्रदर्शनी में अलग-अलग विषयों को रखा गया है। इसलिए हर कार्यकर्ता को यह प्रदर्शनी देखना चाहिए और समझना चाहिए कि प्रदर्शनी में क्या-क्या और क्यों प्रदर्शित किया गया है? वह दिल्ली के निवासी हैं, लेकिन यह कल्पना ही नहीं कर सकते हैं कि दिल्ली के इतिहास को भी प्रदर्शित किया जाएगा। यह वह इतिहास है, जिसके बारे में दुनिया को जानकारी नहीं होगी। प्रदर्शनी में ऐसे-ऐसे विषय हैं, जिसे समझने के लिए सभी को प्रदर्शनी देखना चाहिए। उन्हें जानकारी दी गई है कि अबकी बार अधिवेशन में पांच स्मारिका का विमोचन किया जाएगा। लेकिन एक समय ऐसा भी था, जब एक स्मारिका को प्रकाशित करना ही बड़ा कार्य होता था। उन्होंने बताया कि दिल्ली में 1971 में आयोजित अधिवेशन के समय उनके पास अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री का दायित्व था। उस समय अधिवेशन टेंट सिटी में हुआ था। 1985 में भी एक अन्य अधिवेशन का आयोजन टेंट सिटी में किया गया और अब एक बार फिर अधिवेशन का आयोजन टेंट सिटी में किया जा रहा है।

1971 में हुए अधिवेशन का उल्लेख करते हुए प्रा. राजकुमार भाटिया ने बताया कि उस अधिवेशन का उद्घाटन एम. सी. छागला ने किया था। इस अधिवेशन के साथ ही उन्होंने देश-विदेश के कई अधिवेशन देखें। हालांकि अभाविप से मुक्त हुए उन्हें लगभग पंद्रह वर्ष हो चुके हैं, पर इन वर्षों में अभाविप कहां से कहां पहुंच गया है, यह समझने के लिए पूरा एक दिन चाहिए होगा। अभाविप कई कार्यों को कर रही है, लेकिन अपने कार्यों को बढ़ा-चढ़ा कर बताने की परंपरा नहीं है। उन्होंने अभाविप में सबसे ज्यादा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के माध्यम से ऐसे विद्यार्थी तैयार होते हैं जो सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए और देश को आगे ले जाने के लिए तैयार होते हैं

प्रा. यशवंत राव केलकर से सीखा था। अबकी बार अधिवेशन में उनके नाम पर पुरस्कारों का वितरण भी किया जाएगा। प्रा. केलकर कहते थे कि अगर कार्यक्रम छह बजे होना है, तो इसका अर्थ छह बजे ही होता था। अगर सदस्यता की संख्या 1078 है, तो उसे लगभग ग्यारह सौ नहीं बोलना है। उनका सभी कार्यकर्ताओं से यह कहना था कि प्रामाणिकता को किसी तरह छोड़ना नहीं, बढ़ा-चढ़ाकर बोलना नहीं। देश भर में जो सदस्य संख्या हुई है, जिसका रिकार्ड है, सिर्फ उतना ही बोलना है। आज देखता हूं कि देश भर में अभाविप की सदस्य संख्या लगभग पचास लाख हो रही है, जिस पर उन्हें विश्वास नहीं होता है, लेकिन यह भी सच्चाई है।

उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि अभाविप आज अस्थायी जनसंख्या का स्थायी संगठन है, जो विश्व का सबसे बड़ा उदाहरण है। विश्व में ऐसा कोई संगठन है, इसकी जानकारी उन्हें नहीं है, लेकिन भारत में है। जनसंख्या के हिसाब से भारत सबसे ऊपर पहुंच गया है। इतना बड़ा देश है, इतना पुराना देश है, वहां इस तरह के संगठन की भरपूर गुंजाइश है। न केवल गुंजाइश, बल्कि जरूरत है। अभाविप इस आवश्यकता को पूरा कर रही है और अभाविप का कार्य कॉलेज में होता है। ऐसा विद्यार्थी, जो 15-16 वर्ष से बड़ा है, जो युवा की श्रेणी में आता है। अभाविप के माध्यम से ऐसे विद्यार्थी तैयार होते हैं जो सामाजिक प्रतिबद्धता के लिए और देश को आगे ले जाने के लिए तैयार होते हैं, तब देश को पचास-साठ वर्ष के लिए ऐसे नागरिक मिलते हैं, जो देश को ऊंचाई तक ले जाते हैं। अभाविप, जो अपेक्षित था, उस उद्देश्य को पूरी तरह से प्राप्त कर रही है। इसके लिए वह अभाविप को अपनी शुभकामनाएं देते हैं।

स्वर्गीय दत्ताजी डिडोलकर को याद करते हुए प्रा. राजकुमार भाटिया ने कहा कि दिसंबर 1970 में त्रिवेन्दम में हुए अधिवेशन में वह उनसे मिले थे। इस अधिवेशन में दत्ताजी को अभाविप का राष्ट्रीय अध्यक्ष और उन्हें राष्ट्रीय महामंत्री बनाया गया था। तीन वर्ष तक महामंत्री के रूप में वह दत्ताजी के साथ रहे। दत्ताजी और प्रा. यशवंत राव केलकर का अभाविप में सबसे बड़ा योगदान था। लेकिन हर संगठन में ऐसा समय भी आता है। जब संगठन कठिन समय से गुजरता है। अभाविप के लिए भी वह ऐसा समय था, जब अभाविप कठिन समय से गुजरा। उस समय दत्ताजी अध्यक्ष बने और नेतृत्व किया। दत्ताजी संघ के प्रचारक थे। लेकिन उनके घर में बड़े भाई का निधन हो गया। ऐसे में परिवार के लालन-पालन के लिए दत्ताजी ने प्रचारक जीवन छोड़ दिया, पर वह गृहस्थ नहीं बने। बड़े भाई के परिवार का उन्होंने ध्यान रखा। साथ ही नागपुर में एक कोचिंग संस्थान शुरू किया। वह संस्थान अच्छा चलने लगा और वह प्राध्यापक और निदेशक थे, लेकिन वह सामाजिक कार्य से दूर नहीं हुए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक बाला साहब देवरस, दत्ताजी के मित्र थे और अभाविप के इतिहास में दत्ताजी एक बड़े व्यक्तित्व थे। उनका इसी वर्ष 6 अगस्त से शताब्दी वर्ष मनाया जा रहा है। उनकी स्मृति में बहुत कुछ किया जाना चाहिए। उनकी स्मृति को बनाए रखने का कार्य आगामी पीढ़ी का होता है।

अभाविप की विदर्भ ईकाई नागपुर और विदर्भ में ऐसे प्रयास प्रारम्भ कर चुकी है। अभाविप में ऐसे कई लोग हुए हैं। किसकी स्मृति कैसे बनाए रखनी है, यह कार्यकर्ताओं को देखना होगा। उनकी स्मृति बनी रहे, यह नई पीढ़ी का कार्य होता है। प्रदर्शनी का नामकरण दत्ताजी की स्मृति में हुआ है। इसी तरह मदनदासजी के नाम पर सभागार का नाम रखा गया है। वह उन लोगों में हैं, जिन्होंने मदनदासजी के साथ लम्बे समय तक कार्य किया। बीस वर्ष प्रा. केलकरजी के साथ काम करने करने का अवसर मिला। आज अभाविप जिस स्थान पर है, वह गर्व की बात है। अभाविप क्या करना चाहती है, उसे अभाविप जितनी गहराई से समझेगी, उससे देश के लिए जो करना चाहती है, वह करने में पूरी तरह सफल होगी।

अभाविप कार्यकारी परिषद बैठक में नारी शक्ति वंदन अधिनियम एवं श्रीराम मंदिर पर प्रस्ताव पारित

दिल्ली, 7 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद (एन.ई.सी) की बैठक में 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम : एक ऐतिहासिक पहल' तथा 'भारतीय स्व एवं स्वाभिमान का प्रतीक श्रीराम मंदिर' शीर्षक प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री हुश्यार सिंह मीणा और अंकिता पवार ने प्रस्ताव रखे।

अभाविप ने श्रीराम मन्दिर तथा महिलाओं के सुरक्षा एवं संवर्धन जैसे विषयों से संबंधित आंदोलनों का नेतृत्व किया है। जहां एक ओर राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु लाए गए नारी शक्ति अधिनियम-2023 का पारित होना, न केवल जन आकांक्षाओं की पूर्ति है, अपितु महिला नेतृत्व विकसित करने की दृढ़ इच्छाशक्ति की परिणति है। इसी तरह अयोध्या में भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर निर्मित हो रहे भव्य मन्दिर में रामलला की प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा होना, भारत की पौराणिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की पुनर्स्थापना के साथ ही विगत पांच सौ वर्षों से चले आ रहे अनवरत संघर्ष की सफलता का प्रतीक है।

बैठक में अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने कहा कि अभाविप लगातार महिला शिक्षा, सुरक्षा, सम्मान, स्वास्थ्य एवं स्वावलंबन दिशा में प्रयासरत है। अभाविप विधान सभा और विधान परिषद में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण के विषय में 2018 में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारी परिषद बैठक की मांग को दोहराते हुए नारी शक्ति वंदन अधिनियम-2023 का स्वागत करती है। इसी प्रकार अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण होना प्रत्येक भारतवासी तथा छात्र के लिए गौरवशाली क्षण है।

हिंदवी स्वराज यात्रा का इंद्रप्रस्थ नगर में हुआ भव्य स्वागत

दिल्ली, 7 दिसंबर। छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) द्वारा आयोजित हिंदवी स्वराज यात्रा आज इंद्रप्रस्थ नगर पहुंच कर समाप्त हो गई। इंद्रप्रस्थ नगर पहुंचने पर यात्रा का स्वागत राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, संगठन मंत्री आशीष चौहान सहित अन्य पदाधिकारियों ने किया। इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। यात्रा का उद्देश्य देश के युवाओं को छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन से जुड़े विभिन्न उदात्त पक्षों से अवगत कराना था।

धूमधाम के साथ दिल्ली पहुंची हिंदवी स्वराज यात्रा में कई कार्यकर्ता छत्रपति शिवाजी के सैनिकों की वेशभूषा में थे। हिंदवी स्वराज यात्रा का शुभारम्भ गत 28 नवम्बर को महाराष्ट्र के रायगढ़ किले से हुआ था। दिल्ली पहुंचने तक हिंदवी स्वराज यात्रा ने लगभग दो हजार किलोमीटर की दूरी तय की। इस दौरान यात्रा शिवनेरी, चालीसगांव, धुले, इंदौर, देवास, गुना, शिवपुरी, झांसी, दतिया, ग्वालियर, मुरैना, धौलपुर, आगरा, मथुरा और नोएडा इत्यादि स्थानों से गुजरी। इनमें वह स्थान भी शामिल हैं, जिनका छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

यात्रा के दौरान सभी प्रमुख स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया और कई स्थानों पर स्थानीय लोगों ने यात्रा का भव्य स्वागत भी किया। चूंकि यह वर्ष छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक के 350वां वर्ष है। इसलिए 'हिंदवी स्वराज्य यात्रा' 75 किलों से संकल्पित की गई मिट्टी अपने साथ लेकर आई है। यात्रा के साथ शामिल अभाविप के अनेक कार्यकर्ता छत्रपति शिवाजी महाराज के सैनिकों की वेशभूषा में सम्मिलित हुए।

जानकारी हो कि दिल्ली के बुराड़ी स्थित डीडीए मैदान में अभाविप के 69वें अधिवेशन का आयोजन किया जा रहा है। अधिवेशन स्थल का नाम इंद्रप्रस्थ नगर रखा गया है। इंद्रप्रस्थ नगर को महाभारत में संदर्भित किया गया है। यह प्राचीन भारत के राज्यों में से एक था तथा यह पांडवों की राजधानी थी।

भारतीय संस्कृति एवं इतिहास को व्यापक रूप से सामने रखती है दत्ताजी की स्मृति में आयोजित प्रदर्शनी

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में पूर्व अध्यक्ष दत्ताजी डिडोलकर की स्मृति में आयोजित की प्रदर्शनी भारतीय संस्कृति एवं इतिहास से व्यापक रूप से अवगत करा रही है। प्रदर्शनी में राष्ट्रीय एकात्मता दीर्घा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के विभिन्न प्रतीकों को समायोजित करते हुए दत्ताजी के विषय में विभिन्न चित्रों के माध्यम से अवगत करा रही है।

प्रदर्शनी में राष्ट्रीय एकात्मता दीर्घा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के विभिन्न प्रतीकों को समायोजित किया गया है

प्रदर्शनी में दिल्ली के इतिहास से संबंधित दीर्घा, राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के महाभारत काल से लेकर अब तक के इतिहास का बिंदुवार सचित्र एवं सजीव दर्शन कराती है। इस दीर्घा के माध्यम से यह प्रदर्शित किया जा रहा है कि किस प्रकार राष्ट्रीय गौरव के विभिन्न प्रतीकों के इतिहास को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करके लोगों को दिग्भ्रमित करने का प्रयास किया गया, तो वहीं मध्यकाल में विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध प्रतिरोध में दिल्ली एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरी। स्वाधीनता आंदोलन के अंतर्गत दिल्ली में हुई महत्वपूर्ण क्रांतिकारी गतिविधियों की रोचक जानकारी इस दीर्घा के विभिन्न चित्रों से प्राप्त होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अमृत काल तक की यात्रा भी कलाकृतियों में परिलक्षित है।

विश्वगुरु भारत की पृष्ठभूमि पर आधारित दीर्घा में भारत के ज्ञान-विज्ञान, खेल, खगोल की समृद्ध परम्परा और भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रणेता शुश्रुत, कणाद, पतंजलि, पाणिनी, आर्यभट्ट एवं वराहमिहिर जैसे मनीषियों के जीवन वृत्त को प्रदर्शित किया गया है। यह दीर्घा प्रतिनिधियों को गौरवशाली संस्कृति के प्रति अवगत करा रही है। इसी तरह जब-जब स्वराज्य की बात आती है तो एक उज्जवल नाम सभी के मानसपटल पर आता है और वह नाम है छत्रपति शिवाजी महाराज का। हिंदवी स्वराज्य की स्थापना की 350वी वर्षगांठ पर उन्हें नमन करते हुए एक विशेष दीर्घा में छत्रपति शिवाजी महाराज के संपूर्ण जीवनवृत को कलाकृतियों द्वारा प्रदर्शित किया गया है I इस दीर्घा में उनके जन्म से लेकर एक साम्राज्य की स्थापना के पीछे के व्यापक संघर्ष और स्वराज्य की भावना पर कुठाराघात करने वाले शत्रुओं से लोहा लेने का सजीव चित्रण है।

इसके साथ ही अभाविप की विभिन्न आयाम कार्य गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की झलक प्रदर्शनी में देखी जा सकती है। सनौली के पुरातात्विक उत्खनन में प्राप्त रथ, मानगढ़ एवं जी-20 आदि से संबंधित मॉडल अपनी जीवंतता एवं कलात्मक सुंदरता से सभी को आकर्षित कर रहे हैं। यह सुंदर एवं वृहद प्रदर्शनी सभी प्रतिनिधियों को भारतीय संस्कृति एवं इतिहास से व्यापक रूप से अवगत करा रही है।

पर्यावरण हितैषी है अभाविप का अधिवेशन

- छात्र हितैषी ही नहीं, पर्यावरण हितैषी भी है अभाविप
- पर्यावरण अनुकूल व्यवस्था का उपयोग कर रहे हैं देशभर से आए हजारों प्रतिनिधि
- कबाड़ से जुगाड़ दे रहा है पर्यावरण संरक्षण का संदेश

अवनीश सिंह

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का सर्वोच्च ध्येय है। इस दिशा में आगे बढ़ते हुए अभाविप ने भारतीय समाज के समग्र विषयों को अपनी परिधि में रखा है। चाहे वह शिक्षा से जुड़ा विषय हो या समाज से। समाज की बेहतरी व विकास की दिशा में अभाविप सकारात्मक सोच के साथ रचनात्मक एवं क्रियात्मक गतिविधियों को लेकर आगे बढ़ रही है। छात्रों हित के साथ पर्यावरण हित भी अभाविप के लिए सर्वोपरि है।

अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में देशभर के विभिन्न राज्यों से आए आठ हजार से अधिक प्रतिनिधियों की व्यवस्था में भी पर्यावरण हित का अनुपालन देखा जा सकता है। अधिवेशन स्थल पर प्रतिनिधियों के रहने से लेकर भोजन तक की व्यवस्थाओं में पर्यावरण सुरक्षा का विशेष ध्यान दिया जा रहा है। अधिवेशन में हिस्सा लेने वाले प्रतिनिधियों के ठहरने के लिए जहां एक तरफ टेंट सिटी बनाई गई है, वहीं दूसरी तरफ भोजन के लिए पेड़ के सूखे पत्तों से बनी कटोरी एवं प्लेट का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे इन्हें प्रयोग करने के बाद आसानी से प्रकृति में मिलाया जा सके या जैविक कंपोस्ट बनाया जा सके।

इसके अलावा पीने के पानी के लिए स्टील के गिलास का प्रयोग किया जा रहा है। प्रतिनिधि एक ही गिलास का उपयोग बार-बार कर रहे हैं। इसका उद्देश्य पानी की बचत के साथ ही पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता लाना है। अभाविप का उद्देश्य युवाओं के व्यक्तित्व निर्माण के माध्यम से समाज और राष्ट्र का निर्माण करना है। अधिवेशन में भी युवाओं को इसी दिशा में प्रेरित करने का प्रयास किया जा रहा है। पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते हुए अधिवेशन स्थल पर कहीं भी प्लास्टिक से बनी वस्तुओं को प्रयोग में नहीं लिया जा रहा है।

अधिवेशन स्थल पर 'कबाड़ से जुगाड़' जैसे रोचक विषय भी प्रतिनिधियों के लिए आकर्षण का केन्द्र हैं। जीरो वेस्ट मैनेजमेंट की संकल्पना को चरितार्थ करते हुए अभाविप ने इस अधिवेशन में 'कबाड़ से जुगाड़' इंटर्नशिप भी चलाई है। दैनिक जीवन में उपयोग की गई बेकार प्लास्टिक की बोतलों से सैकड़ों की संख्या में डस्टबिन बनाया गए हैं। साथ ही बोतलों के ढक्कन को पुनः उपयोग में लाते हुए अधिवेशन का 'प्रतीक चिन्ह' तैयार किया गया है। इसी तरह गाड़ियों के निष्क्रिय टायरों को स्टूल का रूप दिया गया है।

सोशल मीडिया से...

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अपने 75वें अमृत महोत्सव वर्ष में अपने पुराने सदस्यता के सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए 50,65,264 सदस्यता करते हुए नया रिकॉर्ड स्थापित किया। समस्त कार्यकर्ताओ को हार्दिक शुभकामनाएं।

-अखिलेश सिंह कुशवाहा
(@Villain_304)

X

दिल्ली में आयोजित अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में लगी दत्ताजी डिडोलकर प्रदर्शनी में सोनभद्र के चोपन इकाई द्वारा चलाए गए सेवा कार्य 'परिषद की पाठशाला' का चित्र लगना गौरव का विषय हैं। आप सभी की मेहनत को राष्ट्रीय स्तर पर दिखाया गया है

-मनमोहन निषाद
(@royalnishad001)

X

राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग ले रहे सभी कार्यकर्ताओं को मेरी शुभकामनाएं। यह एक लघु भारत दर्शन है, एबीवीपी कार्यकर्ताओं के लिए त्यौहार है। मुझे भी अपने कालेज समय में तीन राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जो मेरे लिए अविस्मरणीय है।

-देव गोदरा
(@devarambaitu)

X

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में लघु भारत का रूप दिख रहा है। कश्मीर हो या कन्या कुमारी... भारत माता एक हमारी। भारत माता की जय..

-विकास गोला
(@Vikas__Gola)

अधिवेशन स्थल

ज्ञान
शील
एकता
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
सुश्री साक्षी सिंह
(राष्ट्रीय मंत्री अभाविप)
राजकुमार भाटिया
श्री प्रदीप कुमार
(राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अभाविप)

Madhubani Maithili Pai

अखिल भारत
राष्ट्रीय
अखिल भारतीय
अमृत
राष्ट्रीय

गुजरात
जयपुर

गुजरात
गुजरात

पश्चिम महाराष्ट्र

...: झलकियां ...

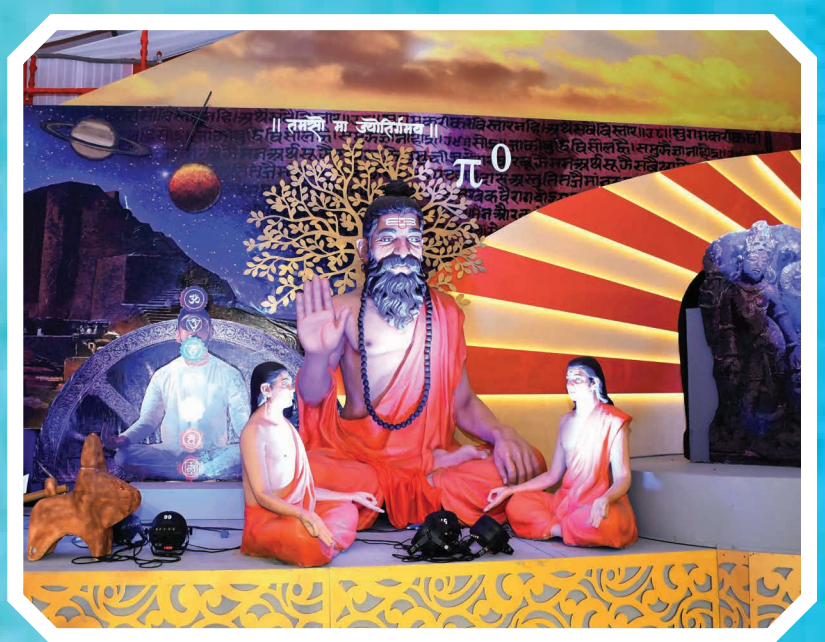

छायाकार : चमन गौतम

राष्ट्रीय अधिवेशन : एक दृष्टि में

वर्ष	स्थान	अतिथि	राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री
1949	दिल्ली	–	श्री ओमप्रकाश बहल	श्री केशवदेव वर्मा
1950	दिल्ली	–	श्री लालराम गुप्ता	श्री नरेश जौहरी
1951	दिल्ली	–	श्री लालराम गुप्ता	श्री नरेश जौहरी
1952	दिल्ली	–	श्री वी.पी. नंदा	श्री नरेश जौहरी
1953	दिल्ली	–	श्री वी.पी. नंदा	श्री नरेश जौहरी
1954	दिल्ली	–	श्री सुरेंद्र मित्तल	श्री वी.पी. नंदा
1955	दिल्ली	–	श्री सुरेंद्र मित्तल	श्री वी.पी. नंदा
1956	सागर	–	श्री वेदप्रकाश नंदा	श्री नकुल भार्गव
1957	जलंधर	–	श्री वेदप्रकाश नंदा	श्री नरेश जौहरी
1958	आगरा	–	श्री वेदप्रकाश नंदा	डॉ. मुरली मनोहर जोशी
1959	मुंबई	पूज्य श्री शंकराचार्य	श्री वेदप्रकाश नंदा	श्री माधव परलकर
1960	जबलपुर	श्री कुंजीलाल दुबे	प्रा. हरिवंशराय ओबेरॉय	श्री माधव परलकर
1961	प्रयाग	नगर निगम अध्यक्ष प्रयाग	प्रा. हरिवंशराय ओबेरॉय	श्री विजय मंडलेकर
1962	दिल्ली	श्री हरेकृष्ण मेहताब	प्रा. वी. नागराजन	श्री विजय मंडलेकर
1963	ग्वालियर	कुलपति, जीवाजी वि.वि.	डॉ. एम.वी. कृष्णराव	श्री रामकृष्ण मिश्र
1964	नागपुर	स्वामी चिन्मयानंद	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1965	मुंबई	श्री जैतन बिन इब्राहिम	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री रामकृष्ण मिश्र
1966	कानपुर	जन. के.एम. करिअप्पा	प्रा. गिरिराज किशोर	श्री भोलानाथ विज
1967	इंदौर	राजमाता विजयाराजे सिंधिया	प्रा. यशवंतराव केलकर	श्री विकास भट्टाचार्य
1968	हैदराबाद	श्री कोका सुब्बाराव	प्रा. नारायणभाई भंडारी	श्री संगमेश्वर रेड्डी
1969	कलकत्ता	श्री आर.सी. मजूमदार	श्री पद्मनाथ आचार्य	श्री व्ही. रविकुमार
1970	त्रिवेंद्रम	श्री मोहन रानाडे	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1971	दिल्ली	श्री जॉर्ज जैकब	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1972	पटना	श्री रामधारी सिंह दिनकर	प्रा. दत्ताजी डिडोलकर	श्री राजकुमार भाटिया
1973	अहमदाबाद	आचार्य जे.बी. कृपलानी	प्रा. नटवरलाल राजगुरु	श्री राजकुमार भाटिया
1974	मुंबई	प्रा. नानी पालखीवाला	श्री बाळ आपटे	श्री पिर्टला व्यैंकटेश्वरलु
1975	आपातकाल			
1976				
1977	वाराणसी	श्री डी.आर. मनकेकर / श्री सिद्ध राज ढड्ढा	प्रा. बाळ आपटे	श्री महेश शर्मा
1978	बैंगलोर	डॉ. के.आर.बी. राव	प्रा. बाळ आपटे	श्री महेश शर्मा
1979	जयपुर	श्री वी.एम. तारकुंडे	प्रा. प्री. व्ही. कृष्णभट्ट	श्री महेश शर्मा
1980	रायपुर	श्री चो रामास्वामी	प्रा. प्री. व्ही. कृष्णभट्ट	श्री महेश शर्मा
1981	हुबली		प्रा. प्री. व्ही. कृष्णभट्ट	श्री महेश शर्मा
1982	नागपुर	श्री कुंजीलाल दुबे / श्री म.द. देवरस	प्रा. ओम प्रकाश कोहली	श्री दत्तात्रेय होसबोले
1983	राजकोट	श्री जे.डी. सेठी	प्रा. ओम प्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1984	पटना	वायुसेनाध्यक्ष अर्जुन सिंह / ले.ज. एस.के. सिन्हा	प्रा. ओम प्रकाश कोहली	श्री सुशील कुमार मोदी
1985	दिल्ली	स्वामी रंगनाथानंद	प्रा. अशोक मोडक	श्री सुशील कुमार मोदी
1986	विशाखापत्तनम	डॉ. रामकृष्ण राव / श्री हो.वे. शेषाद्रि	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेंद्र कुमार
1987	आगरा	श्री अरुण शौरी	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेंद्र कुमार
1988	मुंबई	श्री ए. पी. व्यंकटेश्वरन	प्रा. अशोक मोडक	श्री हरेंद्र कुमार
1989	पटना	श्री भाऊराव देवरस	प्रा. रामस्नेही गुप्त	श्री हरेंद्र कुमार
1990	हैदराबाद	श्री अशोक सिंघल	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1991	जयपुर	श्री जगमोहन	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1992	कानपुर	श्री दलाई लामा	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री चंद्रकांत पाटिल
1993	भुवनेश्वर	श्री नानाजी देशमुख	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री विनोद तावड़े
1994	इंदौर	श्री धर्मपाल	प्रा. राजकुमार भाटिया	श्री वी. मुरलीधरन
1995	नागपुर	श्री ओमप्रकाश बहल / श्री मदनलाल	प्रो. डी.डी. मनोहर राव	श्री वी. मुरलीधरन
1996	बैंगलोर	श्री जी. पद्मनाभन	प्रो. डी.डी. मनोहर राव	श्री महेंद्र पांडेय
1997	चेन्नई	श्री जे.एन. दीक्षित	प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी	श्री महेंद्र पांडेय
1998	मुंबई	श्री जॉर्ज फर्नांडिस	प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
1999	लखनऊ	डॉ. रघुनाथ माशेलकर	प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
2000	रायपुर	श्री एन. विट्ठल	प्रा. दिनेशानंद गोस्वामी	श्री अतुल कोठारी
2001	गुवाहाटी	डॉ. मुरली मनोहर जोशी	डॉ. कैलाश शर्मा	श्री रमेश पप्पा
2002	कोझिकोड	श्री जे.एस. राजपूत / सुश्री पी.टी. उषा	डॉ. कैलाश शर्मा	श्री रमेश पप्पा
2003	कर्णावती	डॉ. के. कस्तूरीरंगन	डॉ. कैलाश शर्मा	श्री के.एन. रघुनन्दन
2004	जयपुर	श्री श्री रविशंकर	डॉ. कैलाश शर्मा	श्री के.एन. रघुनन्दन
2005	भोपाल	श्री डॉ. मोहनराव भागवत	डॉ. कैलाश शर्मा	श्री के.एन. रघुनन्दन
2006	हैदराबाद	मे.ज. (से.नि.) व्ही.एन. शर्मा	डॉ. रामनरेश सिंह	श्री सुरेश भट्ट
2007	कानपुर	श्री अशोक सिंघल	डॉ. रामनरेश सिंह	श्री सुरेश भट्ट
2008	जलगांव	श्री नरेंद्र मोदी	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री विष्णुदत्त शर्मा
2009	ऊना	श्री सुरेशजी सोनी	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री विष्णुदत्त शर्मा
2010	बैंगलोर	जस्टिस रामा जॉइस	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री उमेश दत्त
2011	दिल्ली	जस्टिस लाहोटी	प्रा. मिलिंद मराठे	श्री उमेश दत्त
2012	पटना	श्री जे.सी. शर्मा	प्रा. पी. मुरली मनोहर	श्री उमेश दत्त
2013	काशी	प्रो. कपिल कपूर	प्रा. पी. मुरली मनोहर	श्री श्रीहरी बोरिकर
2014	अमृतसर	श्री के. कुलदीप सिंह चाँदपुरी	प्रा. नागेश ठाकुर	श्री श्रीहरी बोरिकर
2015	भुवनेश्वर	श्री विवेक देवरॉय	प्रा. नागेश ठाकुर	श्री विनय बिद्रे
2016	इंदौर	श्री मनोहर पर्रिकर	प्रा. नागेश ठाकुर	श्री विनय बिद्रे
2017	रांची	श्री जे.पी. नड्डा	डॉ. एस. सुबैय्या	श्री आशीष चौहान
2018	कर्णावती	श्री ए.एस. किरणकुमार	डॉ. एस. सुबैय्या	श्री आशीष चौहान
2019	आगरा	न्यायमूर्ति एल. नरसिम्हा	डॉ. एस. सुबैय्या	सुश्री निधि त्रिपाठी
2020	नागपुर	श्री सुरेश (भैय्याजी) जोशी	डॉ. छगनभाई पटेल	सुश्री निधि त्रिपाठी
2021	जबलपुर	श्री कैलाश सत्यार्थी	डॉ. छगनभाई पटेल	सुश्री निधि त्रिपाठी
2022	जयपुर	स्वामी रामदेव	प्रा. राजशरण शाही	श्री याज्ञवल्क्य शुक्ल

अधिवेशन स्थल: झलकियां ...

"Satta Nahi, Samaj Badalna Hai"

Late Shri Madan Das Devi, Former Sahsarkaryavah of Rashtriya Swayamsevak Sangh, was associated with the ABVP for a long time and held the post of organising secretary. Talking about the state of affairs of educational sector, he suggested "a concerted effort by elites, academecians, politicians and student organisations," to improve the situation. Rashtriya Chhatra Shakti Team have an interview with Shri Madandas ji on the eve of Swarna Jayanti of ABVP in 1998. Following is an excerpts from the interview taken by G. Sridath, the then reporter from Organiser weekly:

Tell us about your experiences with the Akhil Bharatiya Vidyarthi Parishad (ABVP).

I joined the ABVP because I was greatly impressed by its style of functioning, its informal way of dealing with workers and its commitment to nationalism. I started as an ordinary worker and became National Organising Secretary and worked in that capacity for 22 years. In one sentence I enjoyed those years in the ABVP.

What according to you is an ideal student organisation? Does the ABVP satisfy your idea about an ideal student organisation?

An ideal student organisation, though its main area of activity is education, should work for national reconstruction also. I believe, students have a role to play in the social transformation and the ABVP is working towards this end. Perfection is something we are aspiring for. Taking all this into account, the ABVP is the best suited organisation for students in the country.

Recently the High Court of Kerala banned student politics in schools. The Leftists came down heavily on this verdict. What is your view on this?

In fact, Kerala was the only place where electioneering politics was taking place in schools and at many times it assumed monstrous proportions also. Over-politicization in the schools had resulted in student clashes and strikes. So in a way, banning politics in schools has had salutary effect.

There is an air of intellectualism associated with the Left student organisations. How do you feel about this?

I do not think so. If they are real intellectuals, they should change

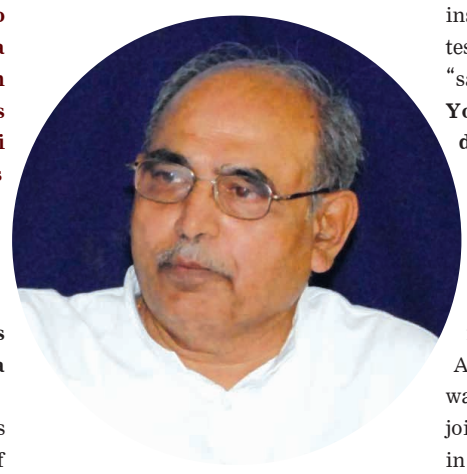

according to the changing times. Status quoism is not the sign of an intellectual. According to one Sanskrit saying "**kriyavan iti panditahan**" - an intellectual is the one who puts into practice what he has learned. The Communists have never tried to learn lessons from history. Communism is ideologically bankrupt and has been proved to be a failure in almost all the countries where Communist form of Government existed. The comrades never believed in the cultural nationalism of this land and so they were rejected by the people of the country. Therefore, their claim of intellectualism does not hold water. Once Jawaharlal Nehru University was considered to be their bastion. However, it has also crumbled. On the other hand, the ABVP has tried to change the status quo. We are parivartanvadi i.e., pro-change. There can be two kinds of parivartanvadis- one discards everything that is old while the other accepts the good things from the past and proceeds towards future. The Upanishadic dictum, "Let noble thoughts come from all sides", is our guiding principle. We believe is transformation and not in revolution.

What is your idea about the future of the ABVP?

The ABVP is not a wing of any political party. Ever since its inception it has been involved in nation-building and it will continue to do so. We are not concerned about which party is running the government or which is in the opposition. Our priorities are national and educational issues. For instance, we favoured the nuclear tests conducted by India. For us, "satta nahi samaj badalna hai".

You have said that the ABVP is different from the BJP. But many of the latter's leaders have come from the ABVP. Please comment.

Ideologically we have many similarities with the BJP and I do not deny that. So naturally, if an ABVP activist, after his education, wants to work in politics, he will join the BJP. Their background in ABVP gets highlighted because politicians generally receive more media attention than anything else. However, I am confident that the ABVP will not become a part of the BJP.

There is a value erosion in society. Do you think that ABVP has a role to play in containing this?

Yes. Lately, we have a 3D-culture-disco, drinking and dancing. Besides these, there is Doordarshan to pollute the young minds. The invasion of satellite channels has changed the attitude of the people, especially the younger generation. Moral education is not adequately imparted to them. The elite is maintaining an indifferent attitude towards such issues. A concerted effort should be initiated by academicians, politicians and student organisations to improve the situation.

What's your message to ABVP workers?

I have had long innings in ABVP. From my experience I can tell you that the young generation loves values and is in pursuit of idealism. If they get good guidance and education they can create wonders. So our efforts should be to provide them conducive atmosphere to grow and blossom.

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद
वैचारिक अधिष्ठान

प्रथम दिन से ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का लक्ष्य स्पष्ट था— राष्ट्रीय पुनर्निर्माण। उसे कैसे प्राप्त करना है? उसके संबंध में भी प्रायः स्पष्टता थी क्योंकि यह निर्माण-कार्य था, इसलिए सकारात्मक सोच एवं रचनात्मक प्रयत्नों की आवश्यकता अनुभव की जाती थी। अतः स्थान-स्थान पर रचनात्मक गतिविधियां प्रारंभ की गई, परंतु सार्वजनिक जीवन में कुछ मुद्दे ऐसे भी आते हैं, जिनके कारण आवाज उठानी पड़ती है अथवा आंदोलन करना पड़ता है। इसलिए अनेक आंदोलनात्मक गतिविधियां भी संगठन के द्वारा आरंभ की गईं।

उन दिनों भी विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों में छात्रसंघ और उनके चुनाव होते थे। अभाविप के कार्यकर्ताओं को लगा कि छात्रसंघों में हमें भी सहभाग करना चाहिए। यहां-वहां अभाविप कार्यकर्ताओं ने चुनावों में हिस्सा लिया। छात्रसंघों के माध्यम से अथवा अन्य प्रकार से छात्रों का प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व करना भी अभाविप के कार्य में सम्मिलित हुआ। अतः अभाविप का कार्य तीन प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से होने लगा— रचनात्मक, आंदोलनात्मक एवं प्रतिनिधित्वात्मक।

स्थापना के पश्चात् कुछ वर्षों तक अभाविप का विकास धीमी गति से हुआ। 1967 में इसके विकास में तब गति आई, जब मुंबई के एक महाविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक यशवंत राव केलकर परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। यद्यपि यशवंत राव एक वर्ष ही अध्यक्ष रहे, परंतु अभाविप रूपी भवन के शिल्पी के रूप में लगभग दो दशकों तक उन्होंने ही परिषद का मार्गदर्शन किया। जहां तीन प्रकार की गतिविधियों से संगठन प्रारंभ हुआ, वहीं तीन प्रकार की सैद्धांतिक भूमिका भी अभाविप ने अपनाई। चूंकि राष्ट्र-निर्माण का सकारात्मक कार्य करना था, इसलिए अभाविप ने निश्चयपूर्वक यह सैद्धांतिक भूमिका अंगीकार की कि हमें रचनात्मक कार्य करना है। परिषद ने यह भी सैद्धांतिक भूमिका स्वीकार की कि रचनात्मक कार्य प्रथमपुरुषी मानसिकता से संभव होता है। प्रथमपुरुषी मानसिकता अर्थात् पहले कोई भी उचित एवं आवश्यक लगने वाला कार्य स्वयं करना, उसके पश्चात् ही दूसरों से वैसा करने की अपेक्षा करना। रचनात्मक कार्य का प्रत्यक्ष रूप होती हैं— रचनात्मक गतिविधियां। अतः अभाविप की स्थापना ही रचनात्मक गतिविधियों से की गई।

राजनीतिक संबंध एवं सिद्धांत

स्वाधीनता के पूर्व एवं पश्चात् राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में राजनीति, राजनीतिक दल एवं दलों की चुनावी एवं शासकीय भूमिका का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण था और माना भी गया। स्वाधीनता के समय सबसे बड़े दल कांग्रेस के साथ ही अन्य अनेक दल भी विद्यमान थे। स्वाधीनता-पश्चात् कुछ और दल गठित हुए। स्वाधीनता-पूर्व सेंट्रल असेंबली एवं प्रदेश असेंबलियां चुनी जाती थीं, तो स्वाधीनता-पश्चात् लोकसभा एवं विधानसभाएं चुनी जाने लगीं। चुनाव में जिस दल का बहुमत होता था, वह सरकार बनाता था। देश के अनेक नागरिकों एवं चिंतकों को लगता था कि राष्ट्र-निर्माण का कार्य किसी दल विशेष के सत्ता में आने से ही संभव होता है, इसलिए किसी दल विशेष के अंग अथवा अनुयायी बनकर ही राष्ट्र-कार्य संभव होता है। राजनीतिक दलों ने भी अपनी प्रभावी भूमिका हेतु छात्रों, मजदूरों एवं अन्य वर्गों में अपनी शाखाएं बना रखी थीं। अभाविप की स्थापना के समय राजनीतिक दलों की शाखा के रूप में कार्य करने वाले कुछ छात्र-संगठन भी देश में सक्रिय थे।

राजनीतिक दल और शासकीय सत्ता के संबंधों के परिप्रेक्ष्य में अभाविप की दृष्टि प्रारंभ से ही भिन्न थी। उसका मानना था कि यद्यपि दलों का बनना, उनका चुनावों के माध्यम से सत्ता में आना एवं शासकीय तंत्र के माध्यम से देश-कार्य करना आवश्यक एवं स्वाभाविक था, परंतु देश-कार्य का वह एकमात्र मार्ग नहीं था। देश-कार्य के लिए अनेक मार्गों की वांछनीयता एवं संभावनाएं सदा ही रही हैं। अभाविप ने सैद्धांतिक रूप से राजनीतिक दल की शाखा बनने वाला मार्ग नहीं अपनाया। अतः सैद्धांतिक भूमिका के रूप में अभाविप ने माना कि उसे किसी एक दल की शाखा न बनते हुए रचनात्मक कार्य करना है और शिक्षा-जगत के तीनों अंगों को एक परिवार के रूप में देखना है।

अध्यापक-सहभाग

अभाविप के संचालन में अध्यापक भी सक्रिय थे। विद्यार्थी एवं अध्यापक दोनों ही शैक्षिक-परिवार का अंग होते हैं। अभाविप ने माना कि इस परिवार का एक और अंग होते हैं—शिक्षाविद। शिक्षाविद वह होते हैं, जो शिक्षा की विषय-वस्तु का निर्णय करते हैं एवं शिक्षा-व्यवस्थाओं के प्रमुख संचालक होते हैं। अभाविप ने तीनों अंगों को एक ही परिवार का सदस्य माना तथा यह प्रतिपादित किया कि उचित शिक्षा-व्यवस्था के लिए तीनों अंगों का सामंजस्य आवश्यक है। अभाविप की स्थापना के प्रथम दिन से ही एक विषय तय हुआ, वह था संगठन में अध्यापकों की भूमिका। विद्यार्थी और अध्यापक की पूरकता तो एक सर्वविदित तथ्य था ही, परंतु विद्यार्थी-संगठन की स्थापना में अध्यापकों ने सक्रिय भूमिका निभाई और उसके पदाधिकारियों के रूप में उसके कार्यकर्ता भी बने। इसलिए अभाविप अध्यापकों की सक्रिय सहभागिता के आधार पर स्थापित होने वाला एक विशिष्ट छात्र-संगठन बना।

कालक्रम में अध्यापकों की सहभागिता के परिणामस्वरूप ही अभाविप की एक विशेषता स्थापित हुई और वह थी अभाविप का एक सतत उदीयमान स्थायी संगठन वाला रूप। विद्यार्थियों की प्रवहमानता, विशेषकर महाविद्यालयीन विद्यार्थी की अति प्रवहमानता, एक ऐसा तथ्य था, जिससे अभाविप का सामना हुआ। अधिकांश महाविद्यालयीन विद्यार्थी स्नातकीय शिक्षण प्राप्त करते थे और उनका विद्यार्थी काल प्रायः तीन-चार वर्षों का होता था। ऐसे विद्यार्थी वर्ग में प्रतिवर्ष एक-तिहाई अथवा चौथाई नए विद्यार्थी जुड़ते थे, तो इतने ही उससे बाहर भी हो जाते थे। अध्यापकों के रूप में अभाविप को स्थायी एवं परिपक्व कार्यकर्ता प्राप्त होते रहे, जिनके कारण अभाविप में स्थायी संगठन वाले अनेक तत्व स्थापित होते गए, यथा— वह एक संपूर्ण स्वायत्त एवं स्वतंत्र छात्र-संगठन के रूप में भारत के सार्वजनिक जीवन में उदित हुआ।

स्पष्ट चिंतन, तदनुरूप गतिविधियां, स्थायी कार्यकर्ता-समूह एवं अध्यापकों के आधार पर अभाविप भारत में एकमात्र 'संपूर्ण एवं स्वतंत्र छात्र-संगठन' बन गया। इसने छात्र-समुदाय की शक्ति को राष्ट्र-निर्माण के कार्य में सार्थक रूप से नियोजित किया। न केवल इतना ही, बल्कि अभाविप ने विचारपूर्वक 1971 में छात्र-संगठन के लिए एक दर्शन 'छात्र, आज का नागरिक' की भी खोज की। परिषद ने अपने अनुभव, संसार भर में हुए छात्र-सक्रियताओं तथा छात्र-समुदाय की संभावित क्षमताओं के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात् यह दर्शन प्रस्तुत किया, जिसे परिषद ने 'छात्रशक्ति-राष्ट्रशक्ति' के शब्दों में भी व्यक्त किया। इन सभी विशेषताओं के आधार पर भारत के सार्वजनिक जीवन में 'अभाविप' ने सत्तर के दशक के अंत तक स्वयं को एक संपूर्ण, स्वतंत्र एवं स्थायी छात्र-संगठन के रूप में स्थापित कर लिया। वस्तुतः गत अनेक दशकों का उसका इतिहास गुणात्मक एवं संख्यात्मक विकास के साथ ही राष्ट्र-निर्माण के कार्य में विविध प्रकार से योगदान का इतिहास है।

(पुस्तक 'ध्येय यात्रा' के सम्पादित अंश)

भारतीय कलाओं और संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहा है
राष्ट्रीय कला मंच

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में राष्ट्रीय कला मंच से जुड़े समर्पित कार्यकर्ताओं के कार्यों को प्रत्यक्ष रूप से सभी अनुभव कर रहे हैं। राष्ट्रीय कला मंच अभाविप का वह प्रकल्प है, जो कलाप्रेमी विद्यार्थियों, को एक मंच देने एवं उनके सफल प्रयासों को एक सूत्र में पिरोने का काम कर रहा है। राष्ट्रीय छात्रशक्ति से हुई विशेष वार्ता में राष्ट्रीय कला मंच के राष्ट्रीय संयोजक गुंजन ठाकुर बताते हैं कि इस प्रकल्प का उद्देश्य विद्यार्थियों को 64 कलाओं से अवगत कराना है। इसके साथ ही स्टेज पर किस प्रकार से अभिनय करना है, किस तरह से कला का प्रदर्शन करना है, इत्यादि की जानकारी से विद्यार्थियों को अवगत कराया जाता है। यह प्रकल्प 2016 से कार्य कर रहा है।

वह कहते हैं कि प्राचीन काल से भारत साधना की भूमि रही है। विविधताओं से भरे भारत में संस्कृति और साहित्य का भंडार है। लोक-कला एवं नियमबद्ध शास्त्रीय-कला ने सदा सर्वदा विश्व का नेतृत्व किया है। भारत की उसी प्राचीन धरोहर को मंच पर लाने का प्रयास राष्ट्रीय कला मंच कर रहा है। यह विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करते हुए प्रतिभा को मंच प्रदान करता है। राष्ट्रीय कला मंच का यह प्रयास है कि नाटक, संगीत, नृत्य, साहित्य के माध्यम से भारत की राष्ट्रीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हो और इसका गौरव जन-जन तक पहुंचे।

गुंजन ठाकुर के अनुसार अभाविप के 44 प्रान्त में राष्ट्रीय कला मंच की 44 टोली

राष्ट्रीय कला मंच

हैं और हर टोली में बीस विद्यार्थी हैं। यह टोली भिन्न-भिन्न कलाओं में पारंगत है और अपनी कलाओं का प्रदर्शन करती रहती है। राष्ट्रीय कला मंच ने मुंबई में राष्ट्रीय विद्यार्थी फिल्म फेस्टिवल का आयोजन भी किया हैं, जिसमें 16 राज्यों से 59 प्रविष्टियां आई थीं, जिनमें से 29 को चुना गया था। इसके साथ ही 12 भाषाओं में विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई फिल्में भी आई थीं।

वह कहते हैं कि राष्ट्रीय कला मंच का उद्देश्य भारत की राष्ट्रीयता-संस्कृति को बढ़ावा देना है। यह हमारी शक्ति है। हम अपनी मूल संस्कृति को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं। कला मंच गलत आख्यान (नेरेटिव) को सही करता हैं। कला मंच ने हुनरबाज की अवधारणा को विकसित किया है और प्रत्येक पंद्रह दिन में यह हुनरबाज अपनी-अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। अभाविप देश में जहां भी है, वहां पर मंच अपना कार्य कर रहा है।

हमारा उद्देश्य है कि छात्र नकारात्मकता से बचें क्योंकि हमारी पहचान हमारी संस्कृति से है और हम अपनी संस्कृति को पहचानने और बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं। हम समाधान के लिए स्क्रिप्ट तैयार करते हैं और अपरिचित से परिचित तक का सफर करते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि राष्ट्रीय कला मंच कला, संस्कृति, संगीत के विकास की प्रतिबद्धता का ही दूसरा नाम है।